COHERENCE – The Multidisciplinary Research Journal
Volume No: 16, Issue No: 1, Year: 2025 (January-June)
PP: 26-30
ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

मैथिली साहित्य आ अनुवाद

अनामिका
नेट, मैथिली

रसास्वादन मनुष्यक प्रवृत्ति अछि। जे दुनियाक समस्त व्यंजक स्वाद मिथिला के उपलब्ध भऽ जाय तँ दुनिया चक्कर कटबाक कोनो जरूरी? साहित्य समस्त साहित्य जे मिथिला मे भऽ जाय तँ एहि भागम भाग सँ भरल जीवन मे आन भाषाक अध्ययन कठिन अछि। जे लगाव अपन माय सँ होइछ ओ लगाव सतमाय सँ नही होइछ। तेना भाषा रूपी सतमाय सँ पाँछा छोड़एबाक काज करैत छथि कोनो कुशल अनुवादक वएह छथि जे कोनो भाषाक मौलिक स्वाद सँ रसास्वादन करैत छथि। चीनी भाषाक साहित्य सँ हम अपन मातृभाषा मे अवगत भऽ जाएब तखन हमरा लेल चीनी भाषा पढ़बाक कोनो प्रयोजन जेना आमक स्वाद रस मे भेटैछ नहि कि गुठली मे। अथति कोनो भाषा मे अभिव्यक्त विचार कँ दोसर भाषा मे यथावत प्रस्तुति अनुवाद अछि। जाहि भाषा सँ अनुवाद कयल जाइत अछि ओकर मूल भाषा कहल जाइत अछि। जहि भाषा मे अनुवाद कयल जाइत अछि ओकरा लक्ष्य भाषा कहल जाइत अछि। साहित्य समाजक सभ्यता संस्कृति गुण-दोष उद्भव-पराभव ओहि ठामक इतिहास मे गुम्फित रहैत अछि। तँ कोनो सभ्यता-संस्कृति कँ जनबाक लेल ओहि ठामक भाषा साहित्यक अध्ययन आवश्यक अछि। 'अनुवाद' शब्दक उत्पत्ति 'वाद' धातु मे 'अनु' उपसर्ग जुड़ला सँ बनल आ जकर अर्थ होइछ अभिव्यक्त विचार कँ फेर सँ कहब। ई भाषा सिखबा आ सिखेबाक पहिल डैग थिक। जखन हम सातम्-आठम् वर्ग मे छलहुँ, तखन कोनो पढ़निहारक भाषा ज्ञान कतेक छनिक जे जनबाक ई पर्याय छल - संस्कृत अनुवाद करू, राम जाता है। तखन हिन्दी सँ अंग्रेजी कँ, अंग्रेजी सँ हिन्दी, हिन्दी सँ संस्कृत, संस्कृत सँ हिन्दी अनुवाद करब ई मुख्य भाग छल। वर्तमान शिक्षा प्रणाली मे शिक्षाक आधार थिक अनुवाद।

मैथिली साहित्य मे अनुवाद प्रारम्भ करनिहार रहथि कवि कवीश्वर चन्दा झा। उन्नीसय शताब्दी उत्तरार्द्ध मे कवीश्वर चन्दा झा विद्यापति के प्रसिद्ध संस्कृति कृति पुरुष परीक्षाक मैथिली मे अनुवाद कयल गेल। ई कृति मैथिली साहित्य मे अनुवाद विधाक आरम्भ मानल जाइत अछि। अनुवादक संकल्प चन्दा झा निम्न रूपे कयने छथिन–

"अथ पुरुष परीक्षा शुद्ध भाषानुवाद
रचयति कविचन्द्रस्तीर मुक्तर्ववचोभि:"

मैथिली साहित्य मे कवीश्वर चन्दा झा कँ अनुवाद साहित्य समान्तर रूपे चलि रहल अछि। भारतीय भाषा समन्वय एवं पोषण हेतु 12 मार्च 1954 भारत सरकार द्वारा साहित्य अकादमीक स्थापना भेल। सर्वप्रथम सोमदेव द्वारा अनुदित मराठी सन्त कवि नामदेव पर लिखित विनिबन्ध अनुवाद साहित्य अकादमी वर्ष 1976 ई० मे प्रकाशित कयलक। साहित्य अकादमी द्वारा मैथिली साहित्य मे अनुवाद

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

पुरस्कारक शुरूआत वर्ष 1990 ई० सँ कयल गेल। पहिल अनुवाद पुरस्कार उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास' जीक बंगलक महत्त्वपूर्ण कृति विप्रदासक अनुदित पोथी कँ भेटल छल। वर्ष 1990 सँ एखन धरि कुल 32 गोटे कँ अनुवाद पुरस्कार लेल साहित्य अकादमी सँ सम्मानित कयल गेल। वर्ष 2002 ई० मे बेगुसराय जिलाक लेखक सह अनुवादक आचार्य फजलुर रहमान हाशमीक उदुर्सं अनुदित जीवनी अबुल कलाम आजादक लेल हुनका साहित्य सँ सम्मानित कयल गेलनि। मैथिली अनुवाद साहित्य मे हिनका योगदान अविस्मरणीय अछि। अथवा मैथिली अनुवाद साहित्य मे हिनका दूटा पोथी प्रकाशित छनि- मीर तकी मीर आ फिराक गोरखपुरी। लेखक सह अनुवादक डा० रामनारायण सिंह मलयालम उपन्यास चेम्मीन सँ अनुदित उपन्यास मलयाहिन के लेल वर्ष 2014 ई० मे साहित्य अकादमी पुरस्कार सँ सम्मानित कयल गेलनि। मैथिली अनुवाद साहित्य मे हिनक योगदान सेहो अविस्मरणीय छनि। बेगुसराय जिलाक लेखक सह अनुवादक कृतिनारायण मिश्र, वर्ष 1997 ई० साहित्य अकादमी सँ सम्मानित छनि। हिनक एकटा अनुदित पोथी हिन्दी, अंग्रेजी आ मैथिली मे प्रकाशित अछि। मैथिली मे हिनक अनुदित पोथी 'महामहोपाध्याय गोपीनाथ कविराज' प्रकाशित अछि। मेनका मल्लिक, जिनका कतेको अनुदित पोथी मैथिली साहित्य मे प्रकाशित अछि- जेना 'ओ लोकनि जे नहि धुरलाह, देश आ अन्य कविता हिनक अनुदित उपन्यास नीलकंठ 2021 ई० साहित्य अकादमी सँ प्रकाशित अछि। लेखक-सह-अनुवादक प्रदीप बिहारी, वर्ष 2007 ई० मे साहित्य अकादमी सँ सम्मानित छथि, बेगुसराय हिनक कर्मभूमि छनि। हिनका एकटा अनुदित पोथी हिन्दी, अंग्रेजी, नेपाली, ओड़िया, असमिया, मराठी या मलयालम मे प्रकाशित अछि। मौलाना अबुल कलाम आजादक जीवनी उर्दु मे अब्दुल कवि देसनवीक द्वारा लिखल गेल। एहि जीवनीक मैथिली मे अनुवाद आचार्य फजलुर रहमान हाशमी द्वारा कयल गेल। ई अनुदित पोथी वर्ष 1995 ई० मे साहित्य अकादमी, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित कयल गेल। एहि अनुदित पोथी लेल आचार्य फजलुर रहमान हाशमी जी कँ वर्ष 2002 ई० के साहित्य अकादमी पुरस्कार सँ सम्मानित कयल गेलनि। ई पोथी प्रसिद्ध कवि, लेखक, पत्रकार आ भारतीय स्वतंत्रता सेनानी मौलाना अबुल कलाम आजादक जीवनी थिक। मौलाना अबुल कलाम आजादक जन्म भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के स्थापनाक (1885 ई.) तीन वर्ष बाद मक्का मे भेल रहनि। हिनक पूर्वज सम्राट बाबरक काल मे 1516 सँ 1530 भारत आयल रहनि। पूर्वज लोकनि शिक्षा मे सर्वदा अग्रणी रहबाक कारणे सम्राट करीब रहथि मुदा अत्यन्त निर्भीक आ स्पष्ट वक्ता। होयबाक कारणे सम्राट सँ टकराव होइते रहलनि। मौलाना जमालउद्दीन (शेख बहलोल) अकबरक धार्मिक असहिष्णुताक तीव्र विरोध कयने रहथि। हुनकर पुत्र शेख मुहम्मद जहाँगीरक काल मे दीर्घकाल धरि प्रताड़ित कयल गेलाह। वहे संस्कार मौलाना अबुल कलाम आजाद मे दृष्टिगोचर भेलनि। हिनक किशोरावस्था मक्काक पवित्र धरती पर बितलनि। 1895 ई० मे मौलानाक पिता खैर उद्दीन के पैरक हड्डी टुटि गेलनि, ओकरे उपचारक लेल हुनका कलकत्ता आयब पड़लनि। कलकत्ता मे मोहम्मद खैरउद्दीनक ख्याति विद्वान मौलानाक रूप मे छल। अबुल कलाम बारह-तेरह वर्षक आयु मे उर्दू, फारसी आ अरबी भाषामे पारंगत भऽ गेलाह आ शायरी, मुशायरा, अनुवाद, गजल आ जीवनी लिखय लगलाह। तेरह वर्षक आयु मे हुनकर विवाह जुलैखा बेगम सँ भेलनि। मौलानाक धार्मिक ग्रन्थक गहन अध्ययन कयने छलथि, ओ वेद, कुरान, गीता आ पाश्चात्य दर्शनक अध्ययन कयलनि। ओ शिक्षाविद सर सैयद अहमद खाँक

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

विचार मे सहमति प्रकट कयलनि। वंशीय पारम्परिक विचारधार सँ मुक्त होयबाक घटना। हुनकर उपनाम 'आजाद' पड़लनि।

सन् 1901 ई० मे मौलाना पत्रकारिता संग-संग आम सभा आ गोष्ठी मे भाषण देब आरम्भ कऽ देने छलाह। 1906 ई० के अग्रज अबुल नस्न आहक का 1908 ई० मे पिताक देहान्तक बाद घरे दायित्व सँ मुक्त भऽ इस्लामी देशक यात्राक योजना बनओलनि, इराक, मिस्र आ तुर्की यात्राक क्रम मे ओहि ठामक क्रांतिकारी सँ भेंट कयलनि। तत्पश्चात् मौलानाक मन-मस्तिष्क स्वतंत्रता-संग्रामक गुलाम भऽ गेलनि। मौलाना अल नदवा, वकील दारुस्सल्तनत, अल हिलाल, अल-बलाघ, पैगाम आदि समाचार पत्र सम्पादनक काज कयलनि। अहि अल हिलालक संदर्भ मे मौलानाक कहब छलनि :-

"हम अपन मनसँ अंतिम समय धरि अल हिलाल चालू राखब चाहैत छी। यदि ईश्वरक इच्छा भेलनि तँ एकर निर्वाह सेहो करब। एही लेल हम सचेत करबाक हेतुएँ पर्चा छापि दैत छी आ अल हिलालक भावी जीवनक लेल पाठक कैं आश्वस्त करैत छियनि।" अल हिलाल पत्र कैं ब्रिटिश सरकार 1914 ई० मे प्रतिबंधित कऽ देलक। मौलाना आजाद एकरा बादो नहि रुकलाह ओ 'अल-बलाघ' नामक पत्रिका निकाललनि जे अल हिलालक प्रतिरूप छल। अन्ततः ब्रिटिश सरकार 'अल-बलाघ' कैं प्रतिबंधित घोषित कऽ मौलाना जी कैं गिरफ़्तार कऽ राँची मे नजरबंद कऽ देलक। नजरबंदीक अवधिमे ओ अंजुमन इस्लामियाक आधारशिला रखलनि जकर उद्देश्य मुसलमानक सुधार शैक्षणिक उत्कर्ष, सामाजिक व्यवहारक शुद्धि आ धर्मिक सेवक प्रति जागरूकता हुनकर उद्देश्य छल। एहि क्रम मे मौलाना कुरानक अनुवाद ओ व्याख्याक काज शुरू कयलनि। 27 दिसम्बर 1919 ई० क मौलाना नजरबंदी सँ मुक्त भेल आह, तखन हुनका जिह्वा पर ई शेर छलनि-

"क़स्द करता हूँ जो इस जा से कहीं जाने का।
दिल यह कहता है कि तू जा, मैं नहीं जाने का॥"

अन्ततः 14 अगस्त 1947 कैं अपन देश विभाजित भऽ गेलैक आ 15 अगस्त 1947 कैं भारत स्वतंत्र देशक पाँती मे ठाढ़ भ गेल। 26 जनवरी 1950 कैं भारत जखन संवैधानिक दृष्टि सँ प्रभुत्वसंपन्न गणराज्य बनल तँ डॉ. राजेन्द्र प्रसाद राष्ट्रपति आ जवाहरलाल नेहरू प्रथम प्रधानमंत्री नियुक्त भेलाह। मौलाना आजाद कैं शिक्षामंत्री पद सौंपल गेलनि। मौलाना 1948 ई० मे उच्च शिक्षा लेल विश्वविद्यालय शिक्षा आयोगक स्थापना कयलनि। तकनीकी शिक्षाक लेल भरण कयलनि जे आई सम्पूर्ण भारत मे तकनीकी शिक्षा परचम लहरि रहल अछि। चित्रकला, मूर्तिकला, संगीत आ साहित्यिक प्रगतिक लेल मौलाना आजाद तीन अकादमी- साहित्य अकादमी, संगीत नाटक अकादमी आ ललितकला अकादमीक स्थापना कयलनि। मौलाना आजाद जीवनभर देशक प्रति एक-एक क्षण समर्पित करैत रहलाह। 22 फरवरी 1958 कैं मौलाना आजाद सर्वदाक लेल दुनियाँ सँ विदा भऽ गेलाह।

बेगूसराय जिलाक दोसर अनुवादक सह लेखक डॉ. रामनारायण सिंह 'छथि', हुनकर अनुदित उपन्यास 'मलाहिन' क लेल वर्ष 2014 ई० मे साहित्य अकादमी अनुवाद पुरस्कार सँ सम्मानित कयल गेल।

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

हिनक हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत या मैथिली वा मलयालम सँ मैथिली मे अनुदित कथा आ प्रकाशित छनि।

मलाहिन, तकषी शिव शंकर पिल्लैक सुविख्यात मलयालम उपन्यास 'चेम्मीन' क अनुदित पोथी अछि। ई पोथी मिथिला सँ मिलैत-जुलैत समुद्र तटीय प्रदेश केरलकेँ मलाह समुदायक दैनिक दिन-चर्याक बीच प्रेम उन्माद केँ उद्घाटित करैत अछि। 1956 ई० मे प्रकाशित 'चेम्मीन' क एखन धरि अनेको देशी-विदेशी भाषा मे अनुवाद भऽ चुकल अछि। मैथिली मे एकर अनुवादित पोथी 'मलाहिन' क नाम सँ वर्ष 2011 मे प्रकाशित भेल। एहि अनुदित उपन्यासक लेल साहित्य अकादमी द्वारा डॉ. रामनारायण सिंह जी केँ वर्ष 2014 ई० मे सम्मानित कयल गेल। मूलतः ई उपन्यास कामोत्तेजना प्रतीक माछ सँ जुड़ल रहनिहार मलाह समुदायक जीवन-शैली, आस्था-अनास्था, संघर्ष-उत्साह, ओ प्रेम-प्रसंग केँ उद्घाटित करैत अछि। मिथिला सेहो माछक व्यापार आ उत्पादनक लेल प्रसिद्ध अछि। दुनू ठामक सामाजिक, सांस्कृतिक आ व्यापारिक क्रिया-कलाप मे कोन वैस भिन्नता नहि अछि। उपन्यासक नायिका करूतम्मा झिंगा माछ जकाँ समुद्रक कछेर आ समुद्रक पानी क अपन क्रीड़ा सँ परीकुट्टी (नायक) केँ मोहि लैत अछि। उपन्यासकार करूतम्मा आ परीकुट्टीक प्रेम-प्रसंगक वर्णन जाहि रूपे कयने अछि ओकर तुलना हीर-रांझा, लैला-मजनूं सँ कम नहि भऽ सकैछ। नायक-नायिकाक आकर्षण शुरू सँ अन्त धरि बढ़ले जाइछ। दुनू क बीच आकर्षणक डोरी केँ माय-बाप, सर-समाज, पलनी सन विवाहक गांठ (पलनी सँ भेल बाल-बुतरु (पलनी सँ जन्मल बेटी) आ अप्राकृतिक रूपे भाई-बहिनक प्रेम (माय द्वारा परीक बेटा बनायबाक प्रसंग) सेहो दुनूकेँ विलग नहि कऽ सकल। ओ भीतरे-भीतरे आठर मजबुते होइत गेल।

"बाबू नाह आ जाल किनथिन। मुदा टाका पुरैत छै। की अहाँ किछु टाका उजार 'दे' सकै छै?" परीकुट्टी हाथ खाली देखबैत कहलकै- "हमरा लग कत' अछि?" करूतम्मा हँसि पड़ल आ कहलकै- "त' अपना केँ छोटा सेठ किएक कहैत फिरै छै? ठीक छै, नाह आ जाल किनलाहक बाद नाहमे जे माछ एतहु सँ की व्यापार हेतु हमरा दैब, तैल बापकै कहबही कि नीक दाम देबही त' माछ किएक न भेटतौ? फेर फहक्का पड़ल।"

परी एकटा अल्पवयस्क, छोट पुनिया आ नव सिखुआ व्यापारी छल। ओ अपन सभटा नगदी सँ माछ कीनि कऽ माछक सुखरा बनौने छल, ओ सुखराक भाव तेज होयबाक प्रतीक्षा मे छल। परी अपन व्यापार केँ बिसरी करूतम्माक प्रेम मे एकटा पागल प्रेमी बनि गेल। चेम्पन जखन माछ आ जाल किनबाक लेल उधार माँगलक तँ ओ अपन माछक सुखरा चेम्पन केँ सौंपि देलक। चेम्पन, परीक माछक सुखखा बेची माछ आ जाल बला मलाह बनि गेल। जखन परी माछ किनबाक लेल चेम्पनक ठाम पहुँचल तँ चेम्पन परी सँ अपरिचित जकाँ व्यवहार कयलक। "नगद पाई दियौ हमरा पाई नगद चाही।" परीक पास पाई नही छल, ओकरा व्यापारक लेल माछ नही भेटल। पाईक अभाव मे परीक व्यापार बन्द भऽ गेल, ओकर स्थिति खसैत गेल। चेम्पनक चरपोकड़ बढ़ैत गेल, एक सँ दू, दू सँ तीन माछ खरीदलक, घर-दुआर बनौलक आ भौतिक सुखक आकांक्षा करय लागल। चेम्पनक चरमोत्क व्यवहार सँ करूतम्माक आकर्षण परीक प्रति बढ़ैत गेल। करूतम्मा आ परीक कथा नर्कुनम क प्यार

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

पर जगजियार भऽ गेल। एहि सँ आहत चक्की बेटी कें बुझबैत अछि - "बेटी एहि महासागर मे सभ किछु छै, सभ किछु छै, सभ किछु। एहि मे जाए बला लोक सभ कोना धूरि अबै छै, से तँ कोना बुझबहे? कछेरमे अपन स्त्री गणक पवित्रताक पुण्य प्रतापक बलें ओ सभ धूरि आवैत छै जे ओ सभ पवित्रताक पालन नै करय त मलाह नहक संगादि भँवरि मे फाँसि कऽ मरि जाएत। समुद्र चै जाएबला मलाहक जान कछेरमे रहयवाली ओकर कनियाँक सभक हाथ मे रहै छै?"

महत्वाकांक्षी चेम्पन अपन नाव पर काज करय बला पलनीक संग करूतम्माक विवाह कऽ ओकरा सँ करोट क लेलक। परीक दुःख सँ पीड़ित चक्की बेर-बेर चेम्पन सँ निहोरा करैत अछि जे ओ ओकर पाई आपस कऽ दए, मुदा चेम्पन स्वार्थी भऽ गेल छल। एहि सँ आहत चक्की दुखित भऽ मरि गेल। चक्कीक मरला क बाद चेम्पनक पराभव होयब लागल। चक्कीक मृत्युक बाद चेम्पन पापिक नेहमै डूबि, छोटकी बेटी पंचमी कें सेहो छोडि देलक। पंचमी असहाय भऽ करूतम्माक ओतय पहुँचल। करूतम्मा कें पत्नी सँ एकटा बेटी सेहो जन्मल मुदा करूतम्माक हृदय परीक गुलाम छल। एहि उपन्यासक प्रत्यक्षदर्शी समुद्रमाता, उपन्यासक अंत हमरा भवर मे करैत छथि। पलनी रोजे जकाँ इजोरिया राति मे बंसी ल' माछ पिटबाक लेल बाहइत छै। मुदा वापस नहि आबैत अछि किएक तँ ओ करूतम्मा आ परीक भेद सँ आहत अछि। ओकर हृदयक मोन एक संग नहीं अछि। जाहि सँ ओ समुद्रमाताक महल क बाट धरि लैत छै। करूतम्मा एक युगक बाद बरसाती बसात मे परीक स्वर सुनलक, ओही स्वर मे जे आकर्षण छल ओहि मे करूतम्मा खिचा गेल। चाँदनी आ बरसाती राति मे करूतम्मा छोटा सेठ कें देखि अपना कें रोकि नहि सकल। किएक तँ आइ पलनी अपन स्नेहक भेद खोली निडर भऽ गेल छल।

अनुवादक डॉ. रामनारायण सिंह 'पवि' अनुदित कथ हिन्दी, संस्कृत, मैथिली आ मलयालम मे प्रकाशित अछि। 'मलाहिन' उपन्यास मे निःस्वार्थ प्रेम प्रगाढ़ताक अलावे मलाह समुदायक जीवन शैली, प्राकृतिक आस्था, संघर्ष-उत्साह, धनक लालसाक संग-संग जीवनक सम्पूर्ण पक्ष उद्घाटित होइत अछि। सम्पूर्ण कथा मे मलाह समाजक जीवन शैलीक चित्रण एकटा सरल रोमांटिक कथाक रूप मे भेल अछि। एकर कथानक समाज मे व्याप्त अंधविश्वासक चारूकात घुमि रहल अछि, जे सामाजिक दैनिक क्रिया-कलाप कें प्रभावित करैत अछि। जकर अत्यन्त यथार्थवाद ओ सजीव चित्रण भेल अछि। एखन धरि चेम्मीनक अनेक देशी-विदेशी भाषा मे अनुवाद भऽ चुकल अछि।

संदर्भ सूचि :-

1. डॉ. विनीत कुमार झा, पाठक ऋतेश, उत्पल - संपादक - तीरभुक्ति, शीर्ष पत्रिका, जनवरी-मार्च-2021, प्रकाशक अखिल भारतीय मिथिला संघ, ई-ब्लॉक, संगम विहार, नई दिल्ली-110062
2. रामनारायण सिंह, 'मलाहिन', प्रकाशक- अकादमी, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, पृ० सं० 8 (110001)
3. हाशमी, फजलुर रहमान, अनुवादक, 'अबुल कलाम आजाद', प्रकाशक- साहित्य अकादमी, नई दिल्ली-110001, प्रकाशन वर्ष-1995, प्रथम संस्करण, पृ० सं० 15
4. सिंह, रामनारायण सिंह, 'मलाहिन', प्रकाशक- साहित्य अकादमी नई दिल्ली-110001, प्रकाशन वर्ष-2011, प्रथम संस्करण, पृ० सं० 17
5. तत्रैव- पृ० सं० 35

© Copyright @ Authors